Vol 5 Issue 1 Oct 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 1 | Oct - 2015

संवेगिक बुद्धि की शिक्षक व शिक्षार्थी के लिये उपयोगिता

अनिल कुमार जैन
एसोसिएट प्रोफेसर(सह–आचार्य), शिक्षा विद्यापीठ, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा.

Co - Author Details :

l/khjk
“kk/kkFkh] f”k{kk fo|kihB] o/keku egkohj [kyk fo”ofo|ky;] dkVk-

सारांश

विद्यार्थी राष्ट्र की सम्पत्ति और उसके भावी कर्णधार होते हैं। उनके मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक आदि सभी प्रकार के निर्माण एवं विकास का उत्तरदायित्व अध्यापक पर होता है। छात्र बगीचे के पौधे के समान है, अध्यापक माली है, जो उस पौधे को सींचते हैं, उनकी काट छांट करते हैं तथा अन्य सब प्रकार से उनकी देखभाल करते हैं और इस प्रकार उन्हें फलने योग्य बनाने में अपना योगदान देते हैं। शिक्षा के आधुनिक मनोविज्ञान में संवेगो का प्रमुख स्थान है। संवेग हमारे सब कार्यों को गति प्रदान करते है और शिक्षक को उन पर ध्यान देना अति आवश्यक है। संवेग के अभाव में मानव–मस्तिष्क अपनी किसी भी शक्ति को समाप्त करने में असमर्थ रहता है। अतः शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है कि बालकों में उचित संवेगो का निर्माण और विकास करे। मानसिक बोध तथा संवेगो के संगठन से ही स्थायी भावों का विकास सम्भव है। युवावस्था में बच्चों प्रशिक्षण के द्वारा संवेगात्मक बौद्धिक कलाओं को सिखाने और सुधारने में बालकों की सहायता की जा सकती है। उन्हें प्रशिक्षण द्वारा संवेंगों और उनके समुचित नियत्रंण के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है। इसलिए विद्यालयों के पास बच्चों को संवेगात्मक रूप से साक्षर बनाने का सुअवसर प्राप्त होता है। स्कूलों में हिंसा, जो कभी–कभी विद्यार्थियों की मृत्यु का कारण बनती है, प्रत्यक्ष रूप से संवेंगात्मक असाक्षरता का परिणाम है। बच्चों को पढ़ाने और लिखाने के साथ–साथ इन समस्याओं पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द–संवेग, संवेगात्मक बुद्धि, साक्षरता

प्रस्तावना

आज शिक्षा, विज्ञान तथा मनोविज्ञान में किये जा रहे शोध का मुख्य विषय व्यक्ति के जीवन स्तर में गुणात्मक व भावात्मक वृद्धि करने से है। शिक्षा तथा मनोविज्ञान सिद्धान्त व व्यवहार का समन्वय है शिक्षा तथा मनोविज्ञान का पारम्परिक सम्बन्ध मानव के समन्वित व संतुलित विकास के लिए आवष्यक है। शिक्षा के समस्त कार्य मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित है। शिक्षा के आधुनिक मनोविज्ञान में संवेगो का प्रमुख स्थान है। संवेग हमारे सब कार्यों को गति प्रदान करते है और शिक्षक को उन पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

संवेग के अभाव में मानव–मस्तिष्क अपनी किसी भी शक्ति को समाप्त करने में असमर्थ रहता है। अतः शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है कि बालकों में उचित संवेगो का निर्माण और विकास करे। मानसिक बोध तथा संवेगो के संगठन से ही स्थायी भावों का विकास सम्भव है। श्रेष्ठ संवेगो पर आधारित व्यवहार बालक के स्वास्थ्य को समुन्नत, मानसिक दृष्टिकोण को उदार, कार्य करने की इच्छा को बलवती और सामाजिक सम्बन्धो को मधुर बनाते हैं। इसके विपरीत संवेगो पर आश्रित व्यवहार बालक के शारीरिक मानसिक और सामाजिक विकास क्षतिप्रद प्रभाव डालकर उसको विकृत कर देते हैं।

विद्यार्थी राष्ट्र की सम्पत्ति और उसके भावी कर्णधार होते हैं। उनके मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक आदि सभी प्रकार के निर्माण एवं विकास का उत्तरदायित्व अध्यापक पर होता है। छात्र बगीचे के पौधे के समान है, अध्यापक माली है, जो उस पौधे को सींचते हैं, उनकी काट छांट करते हैं तथा अन्य सब प्रकार से उनकी देखभाल करते हैं और इस प्रकार उन्हें फलने योग्य बनाने में अपना

योगदान देते हैं। अनेक व्यक्तियों का निर्माण करने वाला अध्यापक न केवल एक व्यक्ति बल्कि ऐसी संस्था समझा जाना चाहिए जो विभिन्न संस्कृतियों की झलक देती हो। एक अध्यापक के महत्व को स्पष्ट करते हुए शैल्डन ई. डेविस शास्त्री ने कहा है कि ''किसी भी विद्यालय का महत्व अध्यापक पर निर्भर करता है।''

नैल्सन एल. बासिंग ने अपने शब्दों में कि ''शिक्षा की किसी भी योजना में अध्यापक का केन्द्रीय स्थान होता है। जिस अध्यापक के विद्यार्थी उसके अध्यापन कार्य अथवा शिक्षण से सन्तुष्ट हैं, उसने मानों सब कुछ पा लिया है।'' इसके लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है कि अध्यापक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो, जिस विषय को वह पढ़ाता है, उस पर उसकी पकड़ हो। यह तभी सम्भव है, जब अध्यापक सभी विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक दशाओं को ध्यान में रखकर अध्यापन करे।

रायबर्न ने लिखा है कि – ''अच्छा अध्यापक अपने ज्ञान में वृद्धि करने के लिए सदैव सचेष्ट रहता है, वह अपने ज्ञान को नया व आधुनिक रखने के लिए प्रयत्नशील रहता है।''

अध्यापक में नियमित अध्ययन की आदत होनी चाहिए। राष्ट्र निर्माण में अध्यापक का महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्र की शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक प्रगति अध्यापक पर निर्भर है। अध्यापक को अपना शिक्षण कार्य शिक्षण से सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण तथा अन्य विद्यालयी समस्याओं का समाधान केवल बुद्धि के प्रयोग से नहीं करना होता है, बल्कि बुद्धि और संवेग दोनों का संतुलित समावेश (संवेगात्मक बुद्धि) करके करना पड़ता है।

1. संवेगात्मक बुद्धि का आशयः

सामान्यतः यह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता एवं उपलब्धियाँ उसकी बुद्धि पर आधारित होती हैं। जिसकी बुद्धि लब्धि अधिक होती है, सामान्यतः उसकी जिन्दगी की उपलब्धियाँ भी अधिक होती हैं। परन्तु आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति को अपनी जिन्दगी में जो भी सफलता प्राप्त होती है, उसका मात्र 20% ही बुद्धि लब्धि के कारण होता है और 80ः सांवेगिक बुद्धि के कारण होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि सांवेगिक बुद्धि क्या है? संवेगात्मक बुद्धि से आशय व्यक्ति द्वारा स्वयं के तथा दूसरे के संवेगों को समझना, उनका प्रबन्धन करना तथा उनको नियन्त्रण करने से होता है।

संवेगात्मक बुद्धि दो शब्दों 'संवेग' तथा 'बुद्धि' से मिलकर बना है, संवेग तथा बुद्धि एक दूसरे के सहयोगी तथा परस्पर समांतर क्षमतायें है। संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की तीव्रता, बुद्धि को सही दिशा में विचार करने हेतु प्रेरित करती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसकी अद्वितीय क्षमताओं तथा उद्देश्यों का अनुसरण करने की प्रेरणा प्रदान करती है तथा उसकी अंतः स्थित क्षमताओं, आकांक्षाओं तथा मूल्यों को क्रियाशील बनाती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह स्वयं तथा दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं को पहचान तथा समझ सके तथा उनके प्रति उचित व्यवहार कर सकें, संवेगात्मक बुद्धि के कारण ही व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्रभावी रूप से संवेगों की उर्जा तथा सूचना का प्रयोग करता है।

अमेरिकन मनोवैज्ञानिक सैलोभी एवं मेयर (1990) ने सांवेगिक बुद्धि जैसे पद का प्रतिपादन किया जिससे उनका तात्पर्य मोटेतौर पर व्यक्ति की जिन्दगी के सांवेगिक पहलू से सम्बद्ध क्षमताओं या शीलगुणों के समुच्चय से होता है। बार–ऑन (1997) ने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा है– ''संवेगात्मक बुद्धि द्वारा वह क्षमता परावर्तित होती है जिसके माध्यम से दिन–प्रतिदिन की पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है ओर जो व्यक्ति की जिंदगी में जिसमें पेशेवर तथा व्यक्तिगत धन्धा भी सम्मिलित है, सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।'' इन परिभाषाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि सांवेगिक बुद्धि, व्यक्ति को अपनी जिन्दगी में सफल होने के लिए अति आवश्यक है।

2. विद्यार्थी पर सांवेगिक बुद्धि का प्रभावः

हाईन महोदय का मानना है कि प्रत्येक बच्चा संवेगात्मक बुद्धि के निम्न तत्वों की अपूर्व क्षमता लेकर इस संसार में जन्म लेता है।
1.संवेगात्मक संवेदनशीलता 2. संवेगात्मक स्मृति 3. संवेगात्मक प्रक्रियन 4. संवेगात्मक अधिगम योग्यता।

बच्चा जिस तरह के परिवेश में बड़ा होता है, वह परिवेश इन चारों शक्तियों को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए एक बच्चे में उच्च संगीतीय क्षमता हो सकती है परन्तु यदि बच्चे के इस गुण को कभी पहचाना, पोषित और प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा या उसे अपनी शक्ति को विकसित करने का मौका प्रदान नहीं किया जाएगा तो वह जीवन में कभी भी प्रतिभाशाली संगीतज्ञ नहीं बन सकेगा।

हाईन के अनुसार जन्मजात संवेगात्मक बुद्धि जीवन के अनुभवों विशेषकर माता–पिता, शिक्षक पालनकर्त्ता और परिवार में रहते हुए सीखे गए सवेंगात्मक पाठों से विकसित या क्षतिग्रस्त हो सकती है। व्यक्ति जिस जन्मजात सवेंगात्मक क्षमता के साथ जन्म लेता है उसे ''संवेगात्मक बुद्धि'' और जीवन में अनुभव प्राप्त करने के बाद विकसित या क्षतिग्रस्त बुद्धि को EQ (emotional intelligence quotient) कहा है। उनके अनुसार यदि एक बच्चा उच्च संवेगात्मक बुद्धि के साथ जन्म लेता है तो भी हानिकारक वातावरण में रहकर गलत सवेंगात्मक आदतों को विकसित कर लेता है ऐसा बच्चा जब बड़ा होगा तो उसका EQ (emotional intelligence quotient) कम होगा। इसके विपरीत ऐसा हो सकता है कि एक बच्चे की जन्मजात संवेगात्मक क्षमता बहुत कम हो लेकिन उसे स्वस्थ संवेगात्मक वातावरण प्राप्त होने के कारण उसके EQ (emotional intelligence quotient) का स्तर अधिक हो जाए। EQ(emotional intelligence quotient) के स्तर का अधिक होना जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है जो सफलता के लिए नींव का कार्य करती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि का नष्ट होना निम्न संवेगात्मक बुद्धि के उच्च संवेगात्मक बुद्धि में बदलने की अपेक्षा ज्यादा सम्भावित है क्योकि ''सृजन करने से ज्यादा आसान नष्ट करना है''।

2.1 समस्याओं के समाधान के लिये उपयोगी:

प्रायः देख जाता है कि सवेंगात्मक रूप से बौद्धिक छात्र अपनी समस्याओं के समाधान और कार्यों को कुशलतापूर्वक करने में स्वयं को सक्षम पाता है। जैसा कि बार–ऑन (1997) ने बताया है कि "कार्यस्थल पर संवेगात्मक रूप से बौद्धिक व्यक्ति का निष्पादन बढ़ जाता है।"

संवेगात्मक बुद्धि के बारे में विभिन्न अनुसंधानों के नतीजों से ऐसा लगता है कि जो लोग अपनी भावनाओं का ठीक ढंग से प्रबन्धन कर पाते हैं और दूसरों के साथ कारगर तरीके से निपट पाते हैं उनके अपने जीवन में अधिक संतुष्ट होने की संभावना रहती है और इसलिए वे सूचनाओं को अधिक सहेज कर रख पाते हैं और अपेक्षाकृत अधिक कारगर तरीके से सीख पाते हैं। यह भी स्पष्ट है कि बुद्धि की पारम्परिक धारणा जो संज्ञानात्मक क्षेत्र तक सीमित थी। उसमें हाल के वर्षों में जबरदस्त परिवर्तन आये हैं। ऐसा लगता है कि उच्चतर संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध जीवन में सफलता के अनेक पहलुओं से हैं, खासतौर पर जब बच्चे को संवेगात्मक दृष्टि से बुद्धिमतापूर्ण तरीके से पाला गया हो। इस बात का निश्चित प्रमाण है कि अधिगम जीवन के अनुभव तथा संवेगात्मक बुद्धि एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।

2.2 अधिगम एवं शिक्षण की प्रक्रिया में उपयोगी:

अब तक हुए अनुसंधान के आधार पर ऐसा लगता है कि उच्चतर संवेगात्मक बुद्धि का जीवन के कई पक्षों से सम्बन्ध है। खासतौर पर तब जब बच्चे का लालन–पालन, सीखने और जीवन अनुभव पर आधारित संवेगात्मक परिपक्वता का उत्कृष्ट माहौल रहा हो। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया अर्थात् अधिगम एवं शिक्षण की प्रक्रिया को संवेगात्मक बुद्धि में सुधार लाकर और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

2.3 विद्यालय समस्याओं के समाधान मे उपयोगी:

हाल के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि संवेगात्मक बुद्धि, विद्यालय, समुदाय, व्यापार, संगठन और शिक्षण से सम्बन्धित, रोजमर्रा की समस्याओं को सुलझाने के तौर–तरीकों को प्रभावित करती है। इससे व्यक्ति का सम्प्रेषण, कौशल, नैतिकता, नेतृत्व, समस्याओं के समाधान की प्रक्रिया व सौन्दर्य बोध का आंकलन किया जा सकता है। अनेक जाने–मनोवैज्ञानिकों ने संवेगात्मक बुद्धि के बारे में अपने विचारों एवं निष्कर्षों के साथ–साथ दिन–प्रतिदिन के जीवन के बारे में अपने विचार सामने रखे। संवेगात्मक बुद्धि, एड्स की जानकारी देने, व्यवसायिक शिक्षा, मादक पदार्थों के बारे में शिक्षा, आत्महत्या की रोकथाम और हिसां आदि को रोकने आदि में बड़ी सहायक सिद्ध होती है। प्लेटो ने कहा है कि– श्हम जो भी सीखते हैं उसका कोई न कोई संवेगात्मक आधार होता है। किसी बच्चे की संवेगात्मक स्थिति का असर उसकी सीखने की क्षमता पर पड़ता है।श इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बच्चों के संवेग उनके प्रारम्भिक जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डालते हैं। कक्षा में गुस्से का प्रभाव बहुत ही बुरा पड़ता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला छात्र गुस्सा कर सकता है। परन्तु यदि उसमें संवेगिक परिपक्वता हो तो वह गुस्से पर नियन्त्रण में सहायक बन सकता है। इसी तरह जिन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है वहाँ इस बात की सम्भावना है कि लोगों में अधिक सकारात्मक सवंगे विद्यमान रहे होंगे। वस्तुतः छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके संवेगात्मक बुद्धि में घनिष्ठ एवं धनात्मक सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार अध्यापकों की शिक्षण दक्षता तथा उनकी संवेगात्मक बुद्धि में घनिष्ठ एवं धनात्मक सम्बन्ध होता है।

3. शिक्षक के लिये स्वयं की सांवेगिक बुद्धि को जानना:

शिक्षा एक निर्माणात्मक प्रक्रिया है। इसे शिक्षक इस प्रकार संचालित करता है कि शिक्षण कार्य आनन्द दायक परिस्थिति में चल सके। इसके लिए शिक्षक को सांवेगिक रूप से दक्ष होना चाहिए। यदि किसी शिक्षक में सांवेगिक दक्षता का गुण नहीं होता तो वह अपने छात्रों से प्रेम एवं लगाव नहीं रख सकता है और उसमें बौद्धिक क्षमता के होते हुए भी वह प्राक्कथन छात्रों का प्रिय शिक्षक नहीं बन सकता है। षिक्षक के लिये स्वयं की सांवेगिक बुद्धि को जानना इसलिये आवष्यक है–

3.1 स्वयं की भावनाओं को समझनें के लिये:

संवेगात्मक बुद्धि भावनाओं को चिन्तन से तथा चिन्तन को भावनाओं से जोड़ती है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि संवेगात्मक क्षमताओं का वह समूह है जो उसके परिवार विद्यालय समाज के प्रति व्यक्ति की भूमिका को निर्धारित करते हैं। जो शिक्षक स्वयं के संवेगो पर नियंत्रण रखते है वे संवेगात्मक बुद्धि में संतुलित होते हैं वे समाज में बेहतर सम्बन्धों को स्थापित करने में सक्षम होते हैं। संवेगात्मक बुद्धि वह प्रक्रिया है जो पूरे समूह के बीच सामाजिक सौहार्द को बनाए रखने में सक्षम होती है। स्टेनबर्ग तथा स्मिथ (1985), थार्नडाइक (1920), जान मायर तथा पीटर साल्वे (1990) ने व्यक्तियों के संवेगों के बीच अन्तर के क्षेत्रों को मापने की वैज्ञानिक विधि का विकास किया तथा पाया कि कुछ शिक्षक अपनी स्वयं की भावनाओं को अच्छी तरह समझ पाते हैं, दूसरों की समस्याओं को अच्छी तरह समझ पाते हैं तथा संवेगों से सम्बन्धित समस्या को सुलझाने में कुशल होते हैं।

3.2 कार्यक्षेत्र में प्रभावशीलता:

विभिन्न शोधकर्ताओं के अध्ययन में यह परिलक्षित हुआ कि व्यावसायिक और औद्योगिक जगत में सफलता प्राप्त करने के लिए संवेगात्मक बुद्धि का मजबूत होना आवश्यक है। गोलमैन (1998) ने व्यवसाय जगत में संवेगात्मक बुद्धि के कार्यों को प्रदर्शित किया और कार्य–क्षेत्र में सफलता के लिए मजबूत संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक बताया। प्रत्येक शिक्षक संवेगात्मक बुद्धि के माध्यम से अपने कार्य क्षेत्र में प्रभावशाली हो सकता है। संवेगात्मक बुद्धि के माध्यम से हम एक दूसरे के व्यवहारों एवं भावनाओं को समझ सकते हैं। संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा शिक्षक समझने की योग्यता रखते हैं, जो उसके कार्य क्षेत्र में चतुराई से काम करने की योग्यता प्रदान करती हैं।

3.3 शिक्षण दक्षता

संवेगात्मक बुद्धि कक्षा में शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण दक्षता को प्रभावित करता है। जिस शिक्षक में संवेगात्मक परिपक्वता अधिक होती है उसमें शिक्षण दक्षता अधिक होने की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त शिक्षण अभिक्षमता जो शिक्षक के कार्य निष्पादन एवं शिक्षण व्यवहार का एक प्रमुख भाग है, भी सांवेगिक दक्षता से घनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। क्योंकि सांवेगिक दक्ष शिक्षक छात्रों के भावों की गहराई को समझता है, अपने संवेगों को यथा समय प्रदर्शन एवं नियंत्रण रखता है तथा वह छात्रों की समस्याओं के समाधान में रूचि रखता है, जिससे उसकी शिक्षण अभिक्षमता को बढ़ानें में सहायक होता है।

3.4 बेहतर सम्प्रेषण के लिये:

जिस शिक्षक में संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है उसमें शिक्षण दक्षता अधिक होने की सम्भावना रहती है। अगर अध्यापक कक्षा में अपनी भावनाओं एवं संवेगों पर उचित प्रकार से नियन्त्रण रखकर अध्यापन कार्य करता है तो वह छात्रों के साथ न केवल अच्छा कम्युनिकेशन बनाने में सफल होता है, बल्कि वह विषयवस्तु को बहुत ही सरलता एवं प्रभावी ढंग से छात्रों को समझाने में भी सफल हो पाता है।

4. शिक्षक के लिये विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि की पहचान क्यो आवश्यक है:

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षक इस प्रक्रिया का संगठनकर्ता और आयोजक होता है तथा वह अपने छात्रों के अन्तर्निहित गुणों को विकसित कर, समाज को एक सशक्त नागरिक प्रदान करता है। शिक्षक छात्रों एवं समाज को जोड़ने तथा छात्रों में सामाजिक मान्यताओं, आवश्यकताओं के गुण विकसित करने का प्रमुख माध्यम है। इसलिए शिक्षक छात्रों के साथ सांवेगिक समंजन स्थापित करता है। अतः शिक्षक में सांवेगिक दक्षता का गुण होना आवश्यक है। शिक्षक के लिए अपने छात्रों की समस्या का समाधान करना प्रमुख लक्ष्य होता है। इसके लिए उसमें विषय का ज्ञान होने के साथ बौद्धिक रूप से दक्ष होना भी आवश्यक है। यदि एक शिक्षक बालक की सांवेगिक बुद्धि को सही प्रकार से जान ले तो वह उसकों सहीं जीवन में सही निर्णय दे सकता है। उसके अधिगम स्तर को बढ़ा सकता है। शिक्षक को इस तरह के क्रियाकलाप व उदाहरणों का अपने कक्षा कक्ष वातावरण में करना चाहिये कि शिक्षार्थियों को सांवेगिक बुद्धि की समझ हो सके। यदि शिक्षक को सांवेगिक बुद्धि की पहचान है तो वह अपनी शिक्षण नितियां शिक्षार्थी के अनुसार परिवर्तित कर लेता है। शिक्षार्थी यदि गलत व्यवहार भी करता है तो उसकों समझने का पूरा प्रयास करता है कि इसके इस तरह व्यवहार करने के पीछे कारण क्या है? जानने का प्रयास करता है।

4.1 संवेगात्मक रूप से साक्षर बनाने का सुअवसरः–

गोलमैन (1996) ने तर्क दिया कि श्युवावस्था में बच्चों को प्रशिक्षण देकर उनकी सवेगात्मक बुद्धि की कला को सीखा और सुधारा जा सकता है।श बच्चों को प्रशिक्षण द्वारा सवेंगों और उनके समुचित नियत्रंण के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है। इसलिए विद्यालयों के पास बच्चों को संवेगात्मक रूप से साक्षर बनाने का सुअवसर प्राप्त होता है। स्कूलों में हिंसा, जो कभी–कभी विद्यार्थियों की मृत्यु का कारण बनती है, प्रत्यक्ष रूप से सवेंगात्मक असाक्षरता का परिणाम है। हमें पढ़ने और लिखने के साथ–साथ इन समस्याओं पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

4.2 स्वस्थ जीवनदर्शन का निर्माणः–

आधुनिकीकरण तथा भूमण्डलीकरण के वर्तमान संदर्भों में जहां एक तरफ शिक्षा सार्वजनिक एवं लचीली बनी है। वहीं दूसरी तरफ मूल्यों में गिरावट, सामाजिक घटनाओं के प्रति तटस्थता, असंवेदनशीलता, अस्थिरता, सामाजिक संज्ञान, में कमी जैसी प्रवृत्तियां देखने को मिलती है। हमारे शिक्षालय केवल गणित, भाषा, पर्यावरण जागरूकता के विकास के केन्द्र ही नहीं है बल्कि इस बात के लिए भी उत्तरदायी है कि छात्र किस प्रकार अपनी भावनाओं पर काबू करें, किस तरह सामाजिक कार्यक्रमों में सहयोग करें एवं स्वस्थ जीवनदर्शन का निर्माण करें।

4.3 सामाजिक संतुलन एवं सामाजिक संज्ञान को विकसित करनाः–

शिक्षक को अपनी भूमिका को पहचानना होगा। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक समरसता, संवदेना तथा सामाजिक संज्ञान का भी प्रशिक्षण देना होगा। निश्चित रूप से ये क्रियाकलाप छात्रों की सवेंगात्मक बुद्धि को तीव्र तथा व्यवहारिक बनाने में सहायक सिद्ध होगें। संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक संतुलन एवं सामाजिक संज्ञान को विकसित करने में सकारात्मक योगदान देती है।

4.5 निर्णय क्षमता को विकसित करनाः–

यदि शिक्षार्थी में षुरू से ही संवेगों की पहचान की समझ उत्पन्न कर दी जाये तो वे अपनी उम्र के अंतिम पड़ाव तक समायोजित रूप से जीवन का निर्वाह कर सकते है। अनेक शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि समायोजन एवं सांवेगिक बुद्धि में उच्चतम धनात्मक सहसंबंध है। यदि एक व्यक्ति समायोजित रूप से जीवन का निर्वाह करता है तो वह तनाव,दुषचिंता से मुक्त रहता है। किसी भी परिस्थति में वह उचित निर्णय लेकर जीवन में आई समस्याओं का समाधन कर लेता है।

4.6 तनाव एवं कुण्ठा से मुक्त करने में :–

रेशमा बानो व बीरमती सिंह द्वारा "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिकउपलब्धि में सम्बन्ध।" शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है जिससे यह

स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उनकी संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः विशेष प्रशिक्षणों द्वारा उनकी संवेगात्मक बुद्धि को उच्च बनाने का प्रयास किया जाए। व निम्न संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों के अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों के संवेगात्मक स्तर को उच्च बनाने के लिए घर का वातावरण उत्तम बनायें तथा बच्चों को तनाव एवं कुण्ठा से दूर रखें वे अपनी उच्च आकांक्षाओं को अपने बच्चों पर न थोपें क्योंकि यदि वे अपने बच्चों की क्षमता से अधिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उन पर दबाव बनायेंगे तो सम्भव है कि उनके बच्चे तनाव एवं कुण्ठा से ग्रसित हो जायेंगे तथा उनका संवेगात्मक स्तर प्रभावित होगा जो उनकी उपलब्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डाले।

4.7 कार्यक्षमता बढ़ानें में :–

बुद्धि व्यक्ति के प्रत्येक कार्य को प्रभावित करती है। बुद्धिमान व्यक्ति किसी कार्य को तर्क एवं चिन्तन के आधार पर करता है। इससे उसके कार्य की सफलता की दर बढ़ जाती है। यदि व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण स्थापित करते हुए तथा प्रभावी चिन्तन को आधार करके कार्य करता है तो इससे उसकी कार्यशीलता बढ़ जाती है, जिसका प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि का विकास कर षिक्षक शिक्षार्थी को जिस कार्य में सलंग्न करता है, वह उस कार्य में अधिक सफल तथा उत्पादन सिद्ध हो सकता है तथा अन्य व्यक्तियों को भी अधिक सफल होने में सहायता प्रदान कर सकता है। संवेगात्मक बुद्धि के विकास की प्रक्रिया ऐसे कई तत्वों को स्वयं में समाहित करती है, जो व्यक्ति विशेष तथा संगठन मे व्याप्त तनाव एवं समस्याओं को कम कर सकते है। उदाहरण के लिए– विवादों को कम करना, एक दूसरे को समझना तथा सम्बन्धों को समझकर उन्हें स्थिरता तथा नियंत्रण प्रदान करना आदि।

4.8 नेतृत्व क्षमता का विकासः–

ब्रैडबेरी और ग्रीव्स (2005) ने अपने विश्वव्यापी अध्ययन में इस परिणाम की पुष्टि की। संवेगात्मक बुद्धि क्षमताओं का समूह है जो बुद्धि के साथ–साथ हमारे अन्दर विद्यमान अन्य कौशलों के प्रयोग को निर्धारित करती है। बढ़ती हुई संवेगात्मक बुद्धि, स्कूल, नेतृत्व, विक्रय, शैक्षिक उपलब्धि, विवाह, दोस्ती और स्वास्थ्य के क्षेत्र में अर्जित सफलता के परिणाम के साथ सह–सम्बन्धित है। इसलिए यदि शिक्षक सवेंगात्मक बुद्धि को सुधारने के अभ्यास में रहेगें तो जीवन में आने वाली घटनाओं को नियन्त्रित करने में समर्थ होगें और हम ऐसी परिस्थितियों का निर्माण कर सकेगें जो व्यक्ति को अधिक जिम्मेदार, दानी, सहायक और समृद्ध बनाने में सहायक होगी। बच्चा एक प्रभावषाली नेतृत्व की भूमिका समाज में अदा करेगा।

4.9 बौद्धिक विकास के लिये :

सांवेगिक दक्षताओं का प्रभाव बालक के बौद्धिक विकास पर भी पड़ता है। यद्यपि बुद्धि का उच्चतम विकास शैशवावस्था में ही हो जाता है किन्तु इसके विकास की उच्चतम् सीमा किशोरावस्था के मध्य तक है, जो बालक के शैक्षिक जीवन का हाईस्कूल स्तर होता है। बालक की बुद्धिमत्ता, उसके कार्य कौशल और परिस्थिति नियंत्रण से सम्बन्धित होती है, जो बालक जितनी सरलता से किसी कार्य को कर लेता है तथा व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में उसे प्रस्तुत करता है, उसे ही बुद्धिमान कहा जाता है। इसीलिए बुद्धि को अमूर्त चिन्तन, प्रभावपूर्ण नियंत्रण एवं अनोखे समायोजन की योग्यता कहा जाता है। बुद्धि का सम्बन्ध संवेगों से भी घनिष्ट रूप में है क्योंकि जो व्यक्ति जितना बुद्धिमान होता है, वह उतनी शीघ्रता एवं सरलता से परिस्थितियों का अनमुान कर लेता है और उसके अनुरूप अपने संवेगों चाहे वह प्रेम हो या क्रोध उसे नियंत्रित कर लेता है। इस प्रकार सांवेगिक परिपक्वता के लिए बौद्धिक विकास का होना आवश्यक है।

4.10 शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लियेः

छात्रों द्वारा अपने शैक्षिक सत्र में जो ज्ञान अर्जित किया है, उसका मात्रात्मक मापन ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि है। शैक्षिक उपलब्धि पर सांवेगिक बुद्धि का प्रभाव पड़ता है, जैसे किसी छात्र में घृणा, पलायनशीलता आदि संवेगों के कारण उनकी शिक्षा से अरूचि हो जाती है और उनकी शैक्षिक उपलब्धि न्यनू हो जाती है। इसके विपरीत जिन छात्रों में अपने संवेगों पर प्रभावी नियंत्रण होता है वे परिस्थितियों पर सरलता से नियंत्रण कर लेते हैं और अपनी शिक्षा को प्रभावित होने नहीं देते। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ जाती है। इस प्रकार सांवेगिक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि घनिष्ट रूप से एक दूसरे से अर्न्तसम्बन्धित है। उनका एक दूसरे के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। सामान्यतः जिन बालकों में सांवेगिक स्थिरता, परिस्थितियों पर नियंत्रण एवं बौद्धिक स्तर उच्च होता है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी पायी जाती है।

4.11 किशोरावस्था में आने वाली समस्याओं व जिज्ञासा का विकासः

1.शिक्षक बालक की संवेगात्मक स्थिति को समझने के बाद वह उसके साथ मधुर व्यवहार करते हुए शिक्षण में आने वाले संवेगात्मक अवरोधों को दूर करने का प्रयत्न कर सकता है।

2.बालकों के संवेगात्मक विकास तथा उसको प्रभावित करने वाले तत्वों का ज्ञान उसे कक्षा तथा स्कूल में ऐसा वातावरण प्रदान करने में सहायक होगा जिससे उसका शिक्षण अधिक अर्थपूर्ण व प्रभावी हो।

3.वह अपनी संवेगात्मक स्थिति समझकर उस पर समुचित नियंत्रण रख सकेगा। इसके दो लाभ हैं।

(1) बालको के प्रति मधुर व्यवहार कर सकेगा।

(2) अपने कार्यों की कठिनाइयों के प्रति वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपना सकेगा।

4.अध्यापक छात्रो की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करके क्रमशः किशोरावस्था में आने वाली समस्याओं व अधिगम स्तर में वृद्धि व नवीन को जानने की जिज्ञासा का विकास उचित ढंग से कर सकता है।

5.बच्चे में सुखद व दुखद दोनो संवेग विकसित होने चाहिए। जिन बच्चो को बाल्यावस्था में भरपूर विश्वास नहीं मिलता वे बड़े होकर भी

संवेगात्मक रूप से अपने आप को असुरक्षित महसूस करते हैं। अतः माता–पिता व अध्यापक को यह चाहिये कि वह संवेगात्मक रूप से अस्थिर बालकों को समझकर उसके अनुरूप व्यवहार करे।

अनेक शोध निर्णयों के आधार पर पाया गया है कि ग्रामिण व शहरी विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में अंतर है। अतः शिक्षक को ग्रामिण व शहरी परिवेश के विद्यार्थियों के साथ उनके अनुसार ही शिक्षण कार्य करना चाहिये। साथ ही साथ यह भी पाया गया है कि लड़को की अपेक्षा लड़कियों में सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है। शिक्षक का दायित्व है कि वह लड़कों में भी सांवेगिक बुद्धि का विकास करे।

5. शैक्षिक एवं व्यक्तिगत क्रियाकलापों के माध्यम से शिक्षक छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है जैसे–

1. अध्यापक विद्यार्थियों को संवेगो पर नियंत्रण करने की विधियां बताकर उन्हें सभ्य व शिष्ट बना सकता है।
2. अध्यापक विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि को जाग्रत करके अध्ययन में उनकी रूचि उत्पन्न कर सकता है।
3. अध्यापक को विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि को जानकर व्यवसाय संबंधित निर्देशन तथा शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
4. अध्यापक विद्यार्थियों को उचित संप्रेषण के लिए प्रोत्साहन देकर संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है।
5. अध्यापक विद्यार्थियों तथा स्वयं में नियन्त्रण विकसित करने को बढावा देकर संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है।
6. अध्यापक विद्यार्थियों में सामाजिक विषय वस्तु शिक्षण के लिए नवीन विधियों का प्रयोग कर संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है।
7. अध्यापक विद्यार्थियों के लिये नवीन परिचर्चाओं एवं दृष्टिकोणों पर संगोष्ठी कर संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है।
8. अध्यापक विद्यार्थियों में जिज्ञासु प्रवृत्ति तथा अनुसंधान प्रवृत्ति विकसित कर संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है।
9. अध्यापक विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्वास्थ्य पर महत्व देकर संवेगात्मक बुद्धि को प्रखर बना सकता है।

सारांशः

आधुनिकीकरण तथा भूमण्डलीकरण के वर्तमान संदर्भों में जहां एक तरफ शिक्षा सार्वजनिक एवं लचीली बनी है। वहीं दूसरी तरफ मूल्यों में गिरावट, सामाजिक घटनाओं के प्रति तटस्थता, असंवेदनशीलता, अस्थिरता, सामाजिक संज्ञान, में कमी जैसी प्रवृत्तियां देखने को मिलती है। हमारे शिक्षालय केवल गणित, भाषा, पर्यावरण जागरूकता के विकास के केन्द्र ही नहीं है बल्कि इस बात के लिए भी उत्तरदायी है कि छात्र किस प्रकार अपनी भावनाओं पर काबू करें, किस तरह सामाजिक कार्यक्रमों में सहयोग करें एवं स्वस्थ जीवनदर्शन का निर्माण करें। शिक्षक को अपनी भूमिका को पहचानना होगा। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक समरसता, संवदेना तथा सामाजिक संज्ञान का भी प्रशिक्षण देना होगा। निश्चित रूप से ये क्रियाकलाप छात्रों की सवेंगात्मक बुद्धि को तीव्र तथा व्यवहारिक बनाने में सहायक सिद्ध होगें। संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक संतुलन एवं सामाजिक संज्ञान को विकसित करने में सकारात्मक योगदान देती है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. Kulkarni Praveen M. (2009) Emotional Intelligence and Employee Performance as an Indicator for Promotion, a Study of Automobile Industry in the City of Belgaum, Karnataka, India . International Journal of Business and Management. (4)4 ,161-170

2.Tulika Kush & Dr.C.P. Khokhar (2009)Emotional Intelligence and Work Performance among Executives Europe's Journal of Psychology 1.

3. Noorazzila Shamsuddin, Ramlee Abdul Rahman (2014) The Relationship between Emotional Intelligence and Job Performance of Call Centre Agents .Procedia - Social and Behavioral Sciences. 75 – 81

4. Singh, B. P. (2014). A Study of Emotional Intelligence, Self Concept and Teaching Competence of Secondary School Teachers. Scholarly research journal for humanity science and English language , (1)4, 971-977.

5.कु. दिनेश ठाकुर और श्रीमती योगेश (2013) स्वदेश सिंहं कुशवाहा प्रकाशित विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की बुद्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययनश सन्दर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), 3(1) जून – दिसम्बर 2013

6. राठौर योगिता, संस्मति मिश्रा (2015). ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार का तुलनात्मक अध्ययनण International Journal of Multidisciplinary Research and Development ,(2)2 434-436.

7. लाखेरा संगीता, (2015) शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन. Monthly Multi disciplinary Research Journal review of research,(4)2,1.4.

8. बानो रेशमा (2011) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध. परिप्रेक्ष्य–शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ. (18)2,109.121

9. Topal Mithlesh (2013) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके संगठनात्मक नागरिक व्यवहार से संबंध का एक

अध्ययन .RECENT EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCHES.(5)269-72
10. Bilal Ahmad Lone (2014) . Test Anxiety, Emotional Intelligence and Academic Achievement among Students at the Higher Secondary Level. Asian Journal of Multidisciplinary Studies,(2)5,1-5.
11. Agarwal, J.C. (2002) "Educational Research" Aryan Book Depot., Agra.
12. Sahni Dr.Madhu (2012) Emotional Intelligence in Relation to Occupational Self-efficacy and Personality of Secondary School Teacher. Indian Educational review. (50)2, 48-65
13. Chauhan, S.S. (1999) "Advanced Educational Psychology" Vilas Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi.

Websites

www.danielgoleman.info/topics/emotional intelligence
www.google.com

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org